7-मलेथा की गूल

मध्य गढ़वाल की घाटियों में एक गाँव है - मलेथा। गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ की एक शंृखला अलकनंदा नदी तक चली गई है। दूसरी ओर एक पहाड़ी नदी चंद्रभागा तीव्र वेग से बहती हुई अलकनंदा में मिल जाती है।

विचित्र बात यह थी कि दोनों ओर नदियाँ रहने पर भी मलेथा गाँव में सिंचाई का कोई साधन न था क्योंकि इन नदियों और गाँव के बीच पहाड़ खड़े थे। पानी के अभाव में सारे खेत बंजर पड़े रहते थे।

मलेथा गाँव में एक युवक था माधो सिंह। उसके मन में सदैव एक सपना उभरता रहता था कि यदि नदी का पानी किसी प्रकार हमारे खेतों तक आ जाता तो हमारे खेत भी हरी-भरी फसलों से लहलहा उठते।

एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा, "यदि हम जी-जान से कोशिश करें तो हमारे गाँव में पानी आ सकता है।"

पत्नी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "कैसे ?" माधो सिंह ने कहा, "नदी के किनारे जो पहाड़ है, वही इस ओर पानी आने में बाधक है। पहाड़ की तलहटी में भीतर ही भीतर यदि एक सुरंग बना ली जाए तो उस ओर से नदी का पानी इस ओर आ सकता है।"

पत्नी बोल उठी, "इतना विशाल पहाड़ काटकर सुरंग बनाना क्या संभव है ?"

माधो सिंह ने कहा, "कार्य कठिन तो है लेकिन असंभव नहीं। सोचो, ऐसा होने पर हमारे गाँव का कितना भला होगा ?"

पत्नी ने कहा, "मैं इस महान कार्य में आपके साथ हूँ।"

माधो सिंह ने प्रतिज्ञा की - 'जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक भी बूँद रहेगी, मैं अपने गाँव मलेथा तक गूल निकालकर पानी लाने का प्रयास करूँगा। मैं तब तक चैन की नींद नहीं सोऊँगा, जब तक मलेथा के एक-एक खेत तक पानी नहीं आ जाता।'

अपने स्वप्न को साकार करने के लिए माधो सिंह गैंती-फावड़ा लेकर इस भगीरथ प्रयास में जुट गया। कार्य अत्यंत दुष्कर था, लेकिन उसको विश्वास था कि उसका सपना अवश्य पूरा होगा।

माधो सिंह चट्टान पर गैंती जमाता और उस पर हथौड़े की चोट से चट्टान के टुकड़े जमीन पर आ गिरते। हफ्ते-डेढ़ हफ्ते में ही उसने काफी गहरी सुरंग खोद दी। इससे उसका उत्साह और भी बढ़ गया। माधो सिंह के साहस और धैर्य को देखकर गाँव के अन्य व्यक्ति भी इस कार्य में आ जुटे। उसने दिन-रात एक करके कठोर पहाड़ को छेदकर गूल का निर्माण पूरा कर दिखाया। मलेथा की प्यासी धरती पर पानी बहने लगा।

आज भी मलेथा के शाक-सब्ज़ियों से

भरे खेत माधो सिंह के असीम धैर्य और कठोर श्रम की गवाही दे रहे हैं।

यह भी जानिए -

अभ्यास

शब्दार्थ-

शृंखला = कतार

प्रयास = कोशिश

तीव्र = तेज

दुष्कर = बहुत कठिन

साकार = पूर्ण होना

गूल = पानी की नाली

1. **बोध प्रश्न**: उत्तर लिखिए -

(क) मलेथा के खेत बंजर क्यों पड़े रहते थे ?

(ख) पानी लाने के लिए माधो सिंह ने अपने पत्नी को क्या उपाय बताया ?

(ग) माधो सिंह के मन में क्या सपना उभरता था ?

(घ) सपना पूरा करने के लिए माधो सिंह ने क्या प्रतिज्ञा ली ?

(ङ) माधो सिंह ने अपनी प्रतिज्ञा कैसे पूरी की ?

(च) माधो सिंह की दृढ़ प्रतिज्ञा और कठोर श्रम का क्या परिणाम निकला ?

2. **सोच-विचार:** बताइए -

(क) आप मलेथा गाँव के बच्चे होते तो पहाड़ में सुरंग बनाने में क्या सहयोग करते?

(ख) आपके आस-पास कहाँ-कहाँ जल बरबाद हो रहा है ? सोचिए और जल की बरबादी रोकने के उपाय भी बताइए।

3. **भाषा के रंग** -

(क) पाठ में एक वाक्य आया है, 'मैं तब तक चैन की नींद नहीं सोऊँगा जब तक मलेथा के एक-एक खेत तक पानी नहीं आ जाता।' ऐसे तीन वाक्यों की रचना करें जिनमें 'तब तक' और 'जब तक' शब्दों का प्रयोग हुआ हो।

(ख) नीचे लिखे शब्दों को उदाहरण के अनुसार लिखिए -

- उत्साह - उत्साही स पराक्रम -
- साहस - स परिश्रम -
- बलिदान - स उद्यम -

(ग) नीचे लिखे शब्दों में से संज्ञा शब्द छाँटिए -

तीव्र, फावड़ा, माधो सिंह, खेत, गढ़वाल, गैंती, सुंदर, सिंचाई, पहाड़, हम

(घ) नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

पवन, जल, पृथ्वी, कमल, घर

(ङ) अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

पहाड़, विचलित, तीव्र, बंजर, उत्साह, निश्चय, पानी

(च) उचित स्थान पर विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए-

माधव प्रातःकाल उठकर सैर करने जाता है जलपान के बाद विद्यालय जाता है वहाँ खूब मेहनत से पढ़ता है सभी उसकी प्रशंसा करते हैं

4. **आपकी कलम से** -

(क) आपके पास-पड़ोस में भी ऐसी घटनाएँ घटी होंगी, जब किसी ने कठिन समझे जाने वाले कार्य को कर दिखाया होगा। वह घटना कैसे घटी, अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) 'मलेथा की गूल' कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

5. **अब करने की बारी** -

यहाँ एक सूचना है जो नवीन के गाँव में एक दिन सूचना-पट्ट पर लगाई गई -

आप भी ऐसी सूचना बना सकते हैं। अपने विद्यालय के किसी कार्यक्रम के विषय में एक सूचना बनाइए और उसे सूचना- पट्ट पर लगाइए।

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

8. **इस कहानी से** -

(क) मैंने सीखा - .....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - .....

सूचना-

सभी ग्रामवासी कृपया ध्यान दें। आगामी रविवार दिनांक 20.7.2018 को प्राथमिक विद्यालय, रूपपुर टंडोला में प्रातः 9 बजे से वृक्षारोपण कार्यक्रम होगा।

आप सभी से अनुरोध है कि विद्यालय में एक-एक पौधा लेकर उपस्थित हों तथा वृक्षारोपण कर कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

- ग्राम प्रधान, रूपपुर टंडोला